National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2026; 1(68): 05-08
© 2026 NJHSR
www.sanskritarticle.com

डा. सुमित्रा देवी
विद्यालय शिक्षा विभाग,
हरियाणा

Correspondence:
डा. सुमित्रा देवी
विद्यालय शिक्षा विभाग,
हरियाणा

दयानंद एंग्लो-वैदिक (DAV) आंदोलन: भारतीय पुनर्जागरण और आधुनिक शिक्षा में योगदान

डा. सुमित्रा देवी

1. प्रस्तावना

भारत में शिक्षा का इतिहास सदियों पुराना है, जहाँ प्राचीन काल से ही धार्मिक और पारंपरिक संस्थाएँ ज्ञान के प्रसार का मुख्य केंद्र रही हैं। सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दी के दौरान, जनमानस तक शिक्षा पहुँचाने का कार्य मुख्य रूप से निजी मिशन और परोपकारी लोगों द्वारा व्यक्तिगत स्तर पर किया जाता था। उन्नीसवीं शताब्दी में ब्रिटिश सरकार ने भारत में शिक्षा की स्थिति पर ध्यान दिया और इसके विकास के लिए नीतियां तैयार कीं। हालाँकि, ये नीतियां और वित्तीय प्रावधान सैद्धांतिक रूप से कागजों पर तो मजबूत दिखते थे, लेकिन व्यावहारिक रूप से सरकार ने भारतीय शिक्षा की वास्तविक प्रगति में बहुत कम रुचि दिखाई।

इसी पृष्ठभूमि में ईसाई मिशनरियों ने भारत में कदम रखा और उन्हें आधुनिक शिक्षा का अग्रदूत माना गया। भारत को राजनीतिक रूप से गुलाम बनाने के बाद, औपनिवेशिक ताकतों की इच्छा देश पर सांस्कृतिक विजय प्राप्त करने की थी। अपने धार्मिक और नस्लीय वर्चस्व को सिद्ध करने के लिए उन्होंने ईसाई धर्म के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ भारतीय रीति-रिवाजों, परंपराओं और देवी-देवताओं पर तीखे मौखिक हमले शुरू कर दिए। इसके परिणामस्वरूप भारतीय समाज में एक गहरा डर और चिंता पैदा हो गई। इस सांस्कृतिक और धार्मिक आक्रमण से आत्मरक्षा करने, अपनी पहचान बचाने और समाज में सुधार लाने के उद्देश्य से भारतीय पुनर्जागरण (Indian Renaissance) की शुरुआत हुई, जिसने देश के इतिहास को एक नई दिशा दी।

2. आर्य समाज और स्वामी दयानंद सरस्वती का दृष्टिकोण

पश्चिमी संस्कृति के साथ हुए इस टकराव ने भारत में एक नए शिक्षित और प्रगतिशील वर्ग को जन्म दिया। यह वर्ग वैचारिक रूप से भारतीय ज्ञान और परंपराओं से जुड़ा हुआ था, लेकिन अपने समाज और धर्म की रूढ़ियों व कमियों को दूर करने के लिए पूरी तरह से प्रतिबद्ध था। इसी सामाजिक-धार्मिक चेतना के परिणामस्वरूप उन्नीसवीं शताब्दी में आर्य समाज आंदोलन का उदय हुआ।

स्वामी दयानंद सरस्वती ने 1875 में बॉम्बे (मुंबई) में आर्य समाज की स्थापना की। इस आंदोलन के तीन मुख्य उद्देश्य निर्धारित किए गए थे: हिंदुओं की रूढ़िवादी विचारधारा में सुधार लाना, समाज से अज्ञानता और अंधविश्वास को मिटाना, और वेदों के सच्चे और शुद्ध ज्ञान का प्रसार करना। बॉम्बे में जन्म लेने के बाद इस आंदोलन को सबसे अधिक लोकप्रियता और सफलता पंजाब प्रांत में मिली, जहाँ 1877 में लाहौर में इसकी दूसरी मुख्य शाखा स्थापित की गई। स्वामी दयानंद सरस्वती के जीवनकाल में ही देखते ही देखते इसकी लगभग 131 शाखाएँ देश भर में स्थापित हो चुकी थीं। स्वामी जी का मानना था कि शिक्षा के बिना मनुष्य अधूरा है; वे अशिक्षा को एक अभिशाप और ज्ञान को मोक्ष का साधन मानते थे। समाज में इस चेतना को जगाने के लिए उन्होंने देश के विभिन्न हिस्सों में पारंपरिक 'पाठशालाएँ' शुरू कीं, जिन्हें शुरुआत में सीमित लेकिन महत्वपूर्ण सफलता मिली।

3. डी.ए.वी. (DAV) आंदोलन की शुरुआत और उद्देश्य

30 अक्टूबर 1883 को स्वामी दयानंद सरस्वती के देहावसान के बाद, आर्य समाज लाहौर ने उनके सम्मान में एक उपयुक्त स्मारक स्थापित करने के लिए 9 नवंबर 1883 को एक विशेष बैठक बुलाई। इस बैठक में स्वामी जी की स्मृति को जीवंत रखने के लिए एक 'एंग्लो-वैदिक कॉलेज' स्थापित करने का प्रस्ताव सर्वसंख्या से स्वीकार किया गया। इस संकल्प को व्यावहारिक रूप देने के लिए 'दयानंद एंग्लो-वैदिक कॉलेज ट्रस्ट एंड मैनेजमैंट सोसाइटी' का गठन किया गया।

प्रबंध समिति की शुरुआती बैठकों के बाद, 1 जून 1886 को लाहौर के वाचोवाली में आर्य समाज भवन के भीतर 'दयानंद एंग्लो-वैदिक हाई स्कूल' की शुरुआत हुई। यह भारतीय शिक्षा के इतिहास में एक युगांतरकारी घटना थी, क्योंकि यह देश की पहली ऐसी शैक्षणिक संस्था थी जिसका प्रबंधन और शिक्षक पूरी तरह से भारतीय थे। इस आंदोलन के मुख्य सिद्धांत और उद्देश्य निम्नलिखित थे:

- **राष्ट्रवादी दृष्टिकोण का निर्माण:** ऐसी युवा पीढ़ी तैयार करना जो आधुनिक ज्ञान से लैस हो, लेकिन साथ ही अपनी संस्कृति, धर्म और जड़ों पर गर्व महसूस करे ताकि वे विदेशी मिशनरियों के बहकावे में न आएं।
- **पूरक शिक्षा प्रणाली (समीकरण):** पश्चिमी विज्ञान, अंग्रेजी भाषा और मानविकी (Humanities) के आधुनिक ज्ञान को वेदों के प्राचीन और नैतिक ज्ञान के साथ जोड़कर एक संतुलित पाठ्यक्रम प्रदान करना।
- **सांस्कृतिक पुनरुत्थान:** हिंदी और संस्कृत जैसी भारतीय भाषाओं के शिक्षण को पुनर्जीवित करना और उन्हें आधुनिक संदर्भों में प्रासंगिक बनाना।

4. स्वतंत्रता-पूर्व काल में डी.ए.वी. संस्थाओं का विस्तार

1886 में एक स्कूल के रूप में शुरू हुआ यह आंदोलन बहुत तेजी से आगे बढ़ा। 18 मई 1889 को इस कॉलेज को पंजाब विश्वविद्यालय से संबद्धता प्राप्त हुई और लाला हंस राज को इसका मानद प्रधानाचार्य (Honorary Principal) बनाया गया। शिक्षा के विविधीकरण और सामाजिक सुधारों के लिए कॉलेज के भीतर कई विशेष विभागों की स्थापना की गई:

- **धर्मशास्त्र विभाग:** संस्कृत साहित्य का अध्ययन, आर्य समाज के प्रचारकों को तैयार करना और वैदिक साहित्य पर शोध करने के लिए इसकी स्थापना की गई, जिसे 1921 में 'दयानंद ब्राह्म महाविद्यालय' के रूप में पुनर्गठित किया गया।
- **चिकित्सा शिक्षा:** आयुर्वेद की प्राचीन भारतीय चिकित्सा पद्धति को पुनर्जीवित करने के उद्देश्य से 1898 में लाहौर में 'दयानंद आयुर्वेदिक कॉलेज' शुरू किया गया, जिसमें एक इनडोर अस्पताल, फार्मेसी और डिस्पेंसरी भी शामिल थी।
- **रोजगार-उन्मुख व्यावसायिक पाठ्यक्रम:** जनता की मांग को ध्यान में रखते हुए 1920 में 'इंडस्ट्रियल स्कूल' (औद्योगिक विद्यालय) और इंजीनियरिंग कक्षाओं की शुरुआत की गई।

लाहौर के मुख्य केंद्र के अलावा, डी.ए.वी. प्रबंधन समिति के तहत पंजाब और आसपास के क्षेत्रों में कई अन्य कॉलेज खोले गए, जिनमें जालंधर (1918), रावलपिंडी (1920), हंसराज महिला महाविद्यालय लाहौर (1927), शोलापुर (1940) और मुल्तान (1945) शामिल थे। इस कालखंड में अलीगढ़ के 'मोहम्डन एंग्लो-ओरिएंटल कॉलेज' और बनारस के 'हिंदू कॉलेज' की तरह ही डी.ए.वी. कॉलेज लाहौर ने भी राष्ट्रीय शिक्षा के अपने अनूठे आदर्शों को प्रतिपादित किया।

5. विभाजन का आघात और स्वतंत्रता के बाद का पुनर्गठन (1947-1969)

वर्ष 1947 में देश का विभाजन डी.ए.वी. संगठन के लिए एक अत्यंत विनाशकारी और गहरा आघात सिद्ध हुआ। संगठन ने अपनी 61 वर्षों की कड़ी मेहनत, त्याग और तपस्या से जो कुछ भी कमाया और खड़ा किया था, वह सब एक झटके में बिखर गया। विभाजन से ठीक पहले (1946-47) इस समिति की स्थिति अत्यंत सुदृढ़ थी, जिसके तहत 9 कला और विज्ञान कॉलेज, 7 पेशेवर व तकनीकी संस्थान, और 45 सीधे प्रबंधित स्कूल संचालित हो रहे थे, जिनकी वार्षिक आय लगभग 10,15,000 रुपये थी।

विभाजन के बाद लाहौर और पश्चिमी पंजाब के सारे बड़े संस्थान पाकिस्तान में ही छूट गए। भारत में डी.ए.वी. के पास केवल दो कॉलेज (जालंधर और शोलापुर) और कुछ गिने-चुने स्कूल ही बचे थे। इस भारी नुकसान और उथल-पुथल के बीच, डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंध समिति ने जालंधर को अपना नया मुख्यालय बनाकर नए सिरे से यात्रा शुरू की (293):

- **अंबाला (1948):** मुस्लिम समुदाय द्वारा खाली की गई भूमि के बदले अंबाला में 'डी.ए.वी. कॉलेज (लाहौर) अंबाला' की शुरुआत की गई (293)।
- **दिल्ली (1948):** दिल्ली में प्रतिष्ठित 'हंसराज कॉलेज' की स्थापना की गई (293)।
- **जालंधर (1948):** 'हंसराज महिला महा विद्यालय' को जालंधर में पुनर्गठित और पुनर्स्थापित किया गया।

1950 से 1969 के बीच डी.ए.वी. ने कला और विज्ञान पाठ्यक्रमों के साथ-साथ व्यावसायिक और तकनीकी शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया, जिसके तहत कुल 34 नए संस्थानों की स्थापना की गई। महिला शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए नए महिला शिक्षक प्रशिक्षण कॉलेज

स्थापित किए गए और पंजाब के छोटे कस्बों जैसे जगराओं, यमुनानगर, करनाल, हिसार और नव-विकसित शहर चंडीगढ़ की ओर विस्तार किया गया। साथ ही पंजाब से बाहर निकलते हुए ओडिशा (पुरी) और राजस्थान में भी शिक्षा के नए केंद्र खोले गए।

6. आधुनिक युग में विकास और विविधीकरण (1970 से 2005)

1970 के बाद के दशकों में भारतीय समाज और अर्थव्यवस्था की मांगें बदलने लगी थीं। डी.ए.वी. आंदोलन ने भी इन बदलती परिस्थितियों के अनुसार खुद को ढाला:

•**1970-1989:** इस अवधि में उच्च शिक्षा के कई नए संस्थान स्थापित किए गए, जिसमें हरियाणा ने बढ़त बनाई और पिहोवा, चीका, फरीदाबाद तथा यमुनानगर जैसे छोटे शहरों में नए कॉलेज खोले गए। इसी समय यमुनानगर में डेंटल कॉलेज खोलकर प्रबंधन ने चिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में कदम रखा।

•**1990-2005 (तकनीकी क्रांति):** इस दौर में पारंपरिक कला और विज्ञान कॉलेजों की संख्या में गिरावट आई, जबकि तकनीकी और पेशेवर पाठ्यक्रमों की मांग में भारी उछाल आया। डी.ए.वी. ने पंजाब और हरियाणा में इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी संस्थानों की शुरुआत की, सोलन में डेंटल कॉलेज खोला और जालंधर में नर्सिंग संस्थान की स्थापना की।

बदलते दौर में अंग्रेजी माध्यम की शिक्षा के लिए अभिभावकों की बढ़ती मांग को डी.ए.वी. प्रबंधकों ने समय रहते पहचाना। ईसाई मिशनरियों के कॉन्वेंट स्कूलों के बढ़ते सांस्कृतिक प्रभाव का मुकाबला करने और आत्मनिर्भर वित्तीय मॉडल विकसित करने के लिए डी.ए.वी. ने 'पब्लिक स्कूल' खोलने की एक बड़ी मुहिम शुरू की। यह नीति अत्यंत सफल रही और वर्ष 2005 तक देश भर में डी.ए.वी. के पब्लिक स्कूलों की संख्या 514 तक पहुँच गई। शैक्षणिक सत्र 2005-06 तक उच्च शिक्षा संस्थानों, स्कूलों और पब्लिक स्कूलों को मिलाकर कुल संस्थाओं की संख्या 667 हो चुकी थी।

7. समकालीन चुनौतियाँ और शिक्षा का बाजारीकरण

वैश्वीकरण और आर्थिक सुधारों के बाद के दौर में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में कई गंभीर चुनौतियाँ उभर कर सामने आई हैं:

•**पारंपरिक कॉलेजों का संकट:** आज के दौर में कला (Arts) और विज्ञान (Science) के पारंपरिक कॉलेज अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रहे हैं। दिल्ली और चंडीगढ़ जैसे महानगरों को छोड़कर छोटे शहरों (जैसे जालंधर, अमृतसर, अंबाला, बटाला) के पारंपरिक पाठ्यक्रमों में छात्रों के दाखिले में भारी गिरावट आई है।

•**वित्तीय संकट और राज्य की भूमिका:** राज्य सरकारें उच्च शिक्षा को मिलने वाली वित्तीय सहायता और अनुदानों से लगातार पीछे हट रही हैं, जिसके कारण निजी संस्थाओं पर वित्तीय दबाव बढ़ गया है। अंतरराष्ट्रीय संगठनों (जैसे विश्व बैंक और आईएमएफ) की नीतियों के प्रभाव के कारण शिक्षा का खर्च आम जनता और परिवारों पर स्थानांतरित हो रहा है।

•**शिक्षा का व्यावसायीकरण:** सरकार द्वारा निजी विश्वविद्यालय अधिनियमों को पारित किए जाने से शिक्षा एक 'व्यवसाय' या 'बिजनेस हाउस' में बदल गई है, जहाँ गुणवत्ता से अधिक ध्यान मुनाफे पर केंद्रित होने लगा है। इसके कारण शिक्षा समाज के केवल संभ्रांत और उच्च-मध्यम वर्ग तक सीमित होकर रह गई है और देश का आम आदमी इस अच्छी शिक्षा से वंचित हो रहा है।

8. डी.ए.वी. का सामाजिक उत्तरदायित्व और परोपकारी कार्य

इन तमाम व्यावसायिक चुनौतियों और बाजारीकरण के दबावों के बावजूद, डी.ए.वी. आंदोलन ने स्वामी दयानंद सरस्वती के मूल परोपकारी सिद्धांतों को जीवित रखा है और समाज के कमजोर वर्गों के उत्थान के लिए निरंतर कार्य कर रहा है (298):

•**कमजोर वर्गों का सशक्तिकरण:** संगठन द्वारा झुग्गी-झोपड़ी समूहों में रहने वाले बच्चों और महिलाओं के सशक्तिकरण तथा कौशल विकास के लिए विशेष कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं।

• पिछड़े और जनजातीय क्षेत्रों में सहायता: देश के पिछड़े और आदिवासी क्षेत्रों के लगभग 47,000 वंचित बच्चों को शिक्षा और अन्य आवश्यक सहायता प्रदान की जा रही है।

• अनाथालयों और दिव्यांगों की मदद: फिरोजपुर और शोलापुर में स्थित 'अनाथालय' अनाथ बच्चों को निःशुल्क शिक्षा प्रदान कर रहे हैं, जबकि दिल्ली में स्थापित 'मानो विकास केंद्र' लगभग 2700 मानसिक रूप से दिव्यांग और विकलांग बच्चों को मुफ्त शिक्षा प्रदान कर रहा है।

• साक्षरता अभियान (प्रोजेक्ट कैंडल): बिहार और झारखंड जैसे राज्यों में फैले 31 विशेष केंद्रों के माध्यम से पिछड़े वर्गों के लिए काम किया जा रहा है, और विशेष रूप से बिहार से पूर्ण रूप से अशिक्षा को मिटाने के लिए 'प्रोजेक्ट कैंडल' (Project Candle) नाम से एक बड़ा अभियान चलाया जा रहा है।

9. निष्कर्ष

दयानंद एंग्लो-वैदिक (DAV) आंदोलन केवल स्कूलों और कॉलेजों का एक नेटवर्क मात्र नहीं है, बल्कि यह आधुनिक भारत के निर्माण में सांस्कृतिक चेतना और राष्ट्रवाद को जगाने वाला एक महान वैचारिक आंदोलन रहा है। स्वामी दयानंद सरस्वती ने जिस पूर्वी (वैदिक) विचारधारा की परिकल्पना की थी, उसे डी.ए.वी. ने पश्चिमी वैज्ञानिक उपकरणों और आधुनिक शिक्षा पद्धतियों के साथ जोड़कर एक व्यावहारिक और जीवंत रूप दिया। 21 से अधिक राज्यों में इसका विस्तार इसके मूल उद्देश्यों—'अज्ञानता का नाश और ज्ञान का प्रकाश'—की सफलता को प्रमाणित करता है। वर्तमान समय में डी.ए.वी. आंदोलन का मुख्य ध्यान नए संस्थान खोलने के बजाय अपने मौजूदा विशाल नेटवर्क को सुदृढ़ करने, शिक्षा के नैतिक स्तर को बढ़ाने और युवाओं में वैदिक मूल्यों तथा आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण के संतुलन को बनाए रखने पर केंद्रित है।

संदर्भित ग्रंथ सूची (Works Cited)

1.उपाध्याय, गंगा प्रसाद. *आर्य समाज की उत्पत्ति, कार्यक्षेत्र और मिशन*. आर्य समाज, 1955. कुमार, कृष्ण. *शिक्षा का राजनीतिक एजेंडा: औपनिवेशिक और राष्ट्रवादी विचारों का एक अध्ययन*. सेज पब्लिकेशन्स, 2005.

2.जोन्स, केनेथ डब्ल्यू. *आर्य धर्म: 19वीं शताब्दी के पंजाब में हिंदू चेतना*. यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस, 1976.

3.दयानंद एंग्लो-वैदिक (DAV) कॉलेज प्रबंध समिति. *डी.ए.वी. संस्थाओं का इतिहास, विकास और सामाजिक-शैक्षणिक योगदान (वार्षिक सत्र समीक्षा 2005-06)*. डी.ए.वी. प्रबंध समिति, 2005.

4.भारतीय विश्वविद्यालय संघ (AIU). *भारत में उच्च शैक्षणिक नेटवर्क पर शैक्षिक रिपोर्ट (2002-2003)*. ए.आई.यू., 2003.

5.प्रकाश, आनंद. *स्वामी दयानंद सरस्वती: जीवन और विचार*. वैदिक हेरिटेज फाउंडेशन, 2000. मानव संसाधन विकास मंत्रालय (MHRD). *भारत में उच्च शिक्षा विकास पर वार्षिक रिपोर्ट*. भारत सरकार, 2005.

6.यादव, के.सी., एवं सिंह, जे. *आर्य समाज: हरियाणा में आंदोलन और सामाजिक परिवर्तन, 1875-1947*. मनोहर पब्लिकेशन्स, 1993.

7.राय, लाला लाजपत. *आर्य समाज: इसकी उत्पत्ति, सिद्धांत और गतिविधियों का विवरण, संस्थापक के जीवन परिचय के साथ*. लॉन्गमैन्स, ग्रीन एंड कंपनी, 1915.

8.शर्मा, एस. आर. *महात्मा हंसराज: आधुनिक पंजाब के निर्माता*. आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, 1975.